Rayat Shikshan Sanstha's

D.P. Bhosale College, Koregaon

ISBN: 978-81-927095-1-2
Volume - II

13th and 14th February, 2017

Proceedings of
A Two Day Interdisciplinary International Conference
On
Literature of the Underprivileged in the Global Perspective
Organized by Departments of English, Hindi and Marathi

Editor
Dr. G. S. Bhosale
D.P. Bhosale College, Koregaon.

Chief *Editor*
Prin. Dr. V. S. Sawant.
D.P. Bhosale College, Koregaon.

Index

Sr. No	Subject	Writer	Page No.
26	कुसुम अंसल के हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी शोषण	प्रा.डॉ.आर.पी.भोसले	86
27	'शुभ्रा' उपन्यास में चित्रित नारी शोषण की समस्या	प्रा.डॉ.शिवाजी उत्तम चवरे	89
28	**कोल्हाटी स्त्री की वेदना का जीवंत दस्तावेज़ : छोरा कोल्हाटी का**	**संगीता सूर्यकांत चित्रकोटी**	92
29	कठगुलाब, अकेला, हस्तक्षेप, छिन्नमस्ता, पाँव तले की डूब, डंक, इद्न्नमम उपन्यास में नारी शोषण	डॉ. संजय चोपडे	95
30	फेमिनिज़म और मीडिया	डॉ. विजय महादेव गाडे	98
31	भीष्म साहनी जी के उपन्यासों में नारी शोषण की समस्याएँ	प्रा. नितेश चंदू गांगवे	103
32	कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी शोषण की समस्या	प्रा.डॉ.सौ.सुगंधा हिंदूराव घरपणकर	106
33	कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास में चित्रित नारी शोषण	डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे	108
34	शोषितों का साहित्य–वैश्विक संदर्भ–नारी संदर्भ में	डॉ.शाहीन अब्दुलअजीज पटेल	111
35	चित्रा मुदगल के 'आवां' उपन्यास में चित्रित नारी समस्या	श्री. जे. ए. पाटील	113
36	हिंदी काव्य में चित्रित : नारी शोषण की समस्या	प्रा. रगडे पी. आर	115
37	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी शोषण की समस्या	प्रा. बाळु भोपू राठोड	119
38	हिंदी कहानियों में नारी समस्याओं का चित्रण	प्रा.डॉ.मिलिंद नामदेव साळवे	123
39	नारी शोषण के अधुनातम आयाम	प्रा. डॉ. बाजीराव राजाराम शेलार	129
40	रत्नाकर सांभरिया के कहानी साहित्य में दलित नारी शोषण	श्री.प्रदीप माणिकराव शिंदे	132
41	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में शोषित नारी	सौ.वैशाली शिंदे	134
42	"सूरजमुखी अंधेरे के" उपन्यास के रत्ती का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	प्रा. डॉ. तांबे सुरेखा लक्ष्मण	136
43	'ओमप्रकाश वाल्मिकी की कहानी में नारी शोषण	अर्चना वसंत तराळ	139
44	सूर्यबाला के उपन्यास में नारी शोषण्	प्रा. सौ. वर्णेकर मंदाकिनी विजय	141
45	आदिवासी उपन्यासों में नारी शोषण की समस्याएँ	डॉ. साताप्पा शामराव सावंत	143
46	समकालीन हिंदी कविता में आदिवासियों के शोषण की समस्या	प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई	146
47	**हिन्दी उपन्यास 'धार' में चित्रित आदिवासी स्त्री चेतना**	डाकोरे कल्याणी लिंगुराम	150
48	आदिवासियों के शोषण की समस्या	प्रा. गणेश दुंदा गभाले	152
49	'नदी के मोड पर' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समस्याएँ	गीता दिनकर राऊत	155
50	आदिवासियों के शोषण की समस्या	प्रा.अशोक गोविंदराव उघडे	158
51	उपन्यासों में चित्रित आदिवासियों के शोषण की समस्या	प्रा. डॉ. बोबडे आर. एस.	161
52	शोषितों के साहित्य का अर्थशास्त्रीय अध्ययन	प्रा.डॉ.बळवंत बी.एस.	163
53	आम आदमी के शोषण की पीड़ा से साक्षात्कार 'बकरी'–नाटक'	प्रा. डॉ. नितीन धवडे	165

समकालीन हिंदी कविता में आदिवासियों के शोषण की समस्या

प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई
एम.जे.एस.कॉलेज, श्रीगोंदा ता.श्रीगोंदा जि.अहमदनगर
भ्रमणध्वनी :– 9545104957

भारतीय परिवेश में उपेक्षित समाज समूहों में सबसे पीछडा वर्ग समूह आदिवासी ही रहा है। समकालीन कविता में दलित, स्त्री, सर्वहारा, आदि विमर्शों के साथ आदिवासी विमर्श प्रमुख है। बाजारवादी समाज प्रवृत्तियों ने आदिवासीयों के अस्तित्व पर हमला किया है, उनके विरुद्ध विद्रोह का स्वर संपूर्ण भारतीय भाषाओं के साहित्य में उभरा है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी सहित्य में कथा, उपन्यास, नाटक, कविता आदिवासी विमर्श की स्थापना दृढ हुई है। समकालीन कविता में आदिवासी समाज के प्रति अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करनेवाले कवियों में निर्मला पुतुल, वहारु सोनवणे, लीलाधर मंडलोई, महादेव टोप्पो, सी.बी.भारती, सरिता सिंह, विनायक तुमराम, माधवी खरात, रमेश चॅन्द मीणा, प्रभुनारायण मीणा, कृष्णचंद हुडु संथाली विनोद कुमार शुक्ल, रमणिका गुप्ता, ऋतूराज, अनुज लुगुन आदि प्रमुख है। इस विमर्श के अंतर्गत पर्यावरण के साथ उनके अनुरागात्मक संबंध जीवन शैली की विभिन्न विशेषताएँ, देवी देवताओं के प्रति आस्था, सांस्कृतिक मान्यताओं के पीछे छीपा हुआ तत्वज्ञान आदि के साथ बाजारवादी वर्ग से संघर्ष प्रस्थापित सामंतवादी समाज के विरुद्ध विद्रोह जमीनी अधिकारों के लिए संघर्ष आदी का समोवश होता है। आदिवासी समाज की व्याख्या करते हुए डॉ. विनायक तुमराम कहते है, "एक विशेष पर्यावरण में रहनेवाला, समाज जीवनशैली से सजा, एक से देवी देवताओं को मनानेवाला, समान सांस्कृतिक जीवन आपन करनेवाला परन्तु अक्षरज्ञान रहित मानव समूह यानी आदिवासी। "[1] इस प्रकार आदिवासी यह आदिकाल से खुले गगन के नीचे, तथा प्रकृति से जुडा विज्ञान है। समकालीन हिंदी कविता में आदिवासीओं की शोषण की समस्यॉ ही लेखन का मूल स्त्रोत बन गया है।

आदिवासी शब्द का अर्थ मूल निवासी के रुप में लिया जाता है। पर्यावरण से आदिवासी समाज का सबसे निकट का संबंध है। प्रकृति की गोद में ही इनका अस्तित्व है, औपनिवेशिक संस्कृति की गोद में ही इनका अस्तित्व है। औपनिवेशिक संस्कृति से उपजी मानसिकतावाली सरकार उन्हें बेदखल करने की कोशिश करती रही है, इन्ही बातो के कारण कवि विनोद कुमार शुक्ल कहते है,–

"जो प्रकृति के सबसे निकट है,/जंगल उनका है/आदिवासी जंगल के सबसे निकट है/इस लिए जंगल उनका है/अब उनके बेदखल होने का समय है।"[2]

इस प्रकार समकालीन औपनिवेशिक समय की मार के कारण आदिवासीयों को अपने की जंगल से बेदखल होने के लिए मजबुर किया जाता है, इसी आदिवासीओं के विस्थापन के शोषण को कवि दर्शाते है। जंगल ही आदिवासीयों के जीवनयापन का माध्यम है। जीवन यापन के लिए सूखी लकड़ीया इकट्ठा करना, गोंद का संग्रह, मधु संग्रह, वन–ओषधियों का संग्रह, फल–फूलों का संग्रह, बॉस की तीलीयों से गृह उपयोगी चीजे बनाना आदि कार्य इनके पर्यावरण से जुड़े है। खेती करना, पशु पालन करना, पक्षी पालन करना, शिकार करना आदि उनके आर्थिक स्त्रोत है। प्रकृति पर निर्भर होने के साथ ही व प्रकृति को ही ईश्वर मानते है, प्रकृति को मित्र मानकर उसकी पुजा करते है। लेकिन वर्तमान समय में पर्यावरण से आदिवासीओं को दुर किया जा रहा हैं । सुर्यभानु गुप्त की प्रसिद्ध कविता 'पेड अब भी आदिवासी है, की पंक्तियॉ इस संदर्भ में द्रष्टव्य है–

"पेड इतने हो गए कम /खो
चुकी अपना हरापन जो
उन अभागी जर्द नस्लों की
उदासी है/पेड अब भी
आदिवासी है"[3]

यहॉ पर आदिवासी व्यक्ति को पर्यावरण की होती हानी के कारण हमेशा से इस भयावह स्थिति का सामना करना पड़ा है। पर्यावरण नष्ट होने का खौफ़ पीढी दर पीढ़ी बढ़ रहा है। निर्मला पुतुल नष्ट होते हुए पर्यावरण के प्रति बडा ही संवेदनशील प्रश्न पुछती है–

" क्या तुमने कभी सुना है/सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से/ पेडों की चीत्कार ? "[4]

पर्यावरण के प्रति मनुष्य की असंवेदनशीलता को निर्मला पुतुल सरल प्रभावी शब्दों से समझाती है । हवा,पानी,पेड,फूल आदि की वेदना को वाणी देकर निर्मला पुतुल यह एहसास दिलाती है कि, अनपढ़ गॅवार आदिवासी प्रकृति की वेदना को समझ सकता है।

ISBN: 978-81-927095-1-2

5ण लीलाधर मंडलोई, पचास कविताएँ, नयी सदी के लिए चयन , प्रथम संस्करण 2011 पृ . 69
6. निर्मला पुतुल,एक पत्र अपने सहकर्मियों के नाम , पृ 66
7. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बज़ते शब्द, प्रथम सजिल्द संस्करण : 2005 पृष्ठ – 43
8. वहारु सोनवणे,अरावली उद्घोष , सितंबर : 2011 पृ 16
9. महादेव टोप्पो,अरावली उद्घोष , उदयपुर अप्रैल : 2004 पृ 37
10. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बज़ते शब्द, प्रथम सजिल्द संस्करण : 2005 पृष्ठ – 26
11. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बज़ते शब्द, प्रथम सजिल्द संस्करण : 2005 पृष्ठ – 08
12. गिरिजाशंकर मोदी अरावली उद्घोष , जून : 2009 पृ 54

ISBN: 978-81-927095-1-2